Oct 2017 - Dec 2017 ,Vol 3, No. 2, 142-148 ISSN 2394-9449

Electronic Journal of Advanced Research

An International Peer review E-Journal of Advanced Research

fofHkUu dykUrxr rr ok|k e v/kukru i;kx

l/khj dekj /ko[1]

1 ,e0 fQy0 II le-] 'kk0 Bk0 j.ker flg egkfo|ky;] jhok

Received: 19/12/2017	Revised: 21/12/2017	Accepted: 30/12/2017

'kk/k lkjk'k

भारतीय संगीत विभिन्न प्रकारों से परिवर्तित होते आये हैं। हर कालो में थोडा–थोडा परिवर्तन देखने को मिलता आया है। जैसा की वाद्य वर्गीकरण वाद्यों की बनावट विधि आदि प्रकारों से परिवर्तन होता रहा है। वाद्य वर्गीकरण हमारे भारतीय संगीत में वाद्य वर्गीकरण के चार रूप है। अवनद्ध वाद्य, धन वाद्य, सुशिर वाद्य, तत् वाद्य।

'kCn dith & तुम्बा, अवनद्ध वाद्य, धन वाद्य, सुशिर वाद्य, तत् वाद्य।

fooj.k

भारतीय संगीत में अनेक प्रकार के तत् वाद्यों की परम्परा आदिकाल से चली आ रही है। आदि मानव ने अपनी रूचि एवं बुद्धि के आधार पर कलात्मक विविध तत् वाद्यों की नींव ही नहीं डाली वरन् उनका उपयोग कर मानव जीवन को भौतिक धरातल से ऊँचा उठाकर कला को दिव्य तथा आलौकिक धरा पर लाकर प्रतिश्टित कर दिया। तत् वाद्यों की श्रेणी में किये गये प्रयोगों के माध्यम से ही संगीत के सिद्धान्तों, श्रुति, स्वर, से दूसरे स्वर की दूरी, मूर्च्छना पद्धति आदि को प्रमाणित व निशिचित किया जा सका। आज भी इसमें निरंतर अधुनातन प्रयोग किये जा रहे हैं, जिस प्रकार से प्रत्येक वस्तु मे समयांतराल के साथ–साथ परिवर्तन दृश्टिगत होता है। उसी प्रकार से तत् वाद्यों में भी समयांतराल के साथ–साथ आधुनिक परिवर्तन दृश्टिगत होते है। जिसे हम वादन विधि में अधुनातन प्रयोग के रूप में देख सकते है। कलाकारों के प्रस्तुतिकरण के तरीके में परिवर्तन के रूप में देख सकते है। इनके अतिरिक्त वाद्य की बनावट, प्राचीन वाद्यों के स्थान पर नवीन वाद्यों का प्रयोग तथा तन्त्री वाद्यों के विभिन्न अंगों में भी देख सकते हे। इन सब विशयों में से मैने अपने शोध पत्र में तन्त्री वाद्यों विभिन्न अंगों जैसे– तंबली, तूम्बा, घोड़ी, (जवारी), तंत्रियां, सारिका, खूटियां, आदि मे अधुनातन प्रयोग की विस्तृत व्याख्या की है जो निम्नवत है–

Oct 2017 - Dec 2017 ,Vol 3, No. 2, 142-148 ISSN 2394-9449

Electronic Journal of Advanced Research

An International Peer review E-Journal of Advanced Research

rEck e v/kukru i;kx& तत् वाद्यो में यदि तुम्बे को देखें तो तत् वाद्य के कुछ प्रकारों को छोड़कर सभी में तूम्बा देखने को मिलता है। वि व के सभी तत् वाद्यों में तूम्बे (तूम्बा, तूम्बा) का वि ोश स्थान है। वाद्यों के अनुसार इनके भी इनके आकार में परिवर्तन होता रहता है तथा ये विभिन्न पदार्थ के भी हो सकते है। जसे– कई वाद्यों में यह हिस्सा लकड़ी, प्लाईवुड, धातु का भी होता है। यदि प्राचीन काल से आज तक के तूम्बे पर ध्यान दे ंतो हमें पहले वर्ग में तूम्बे वाले तत् वाद्य– एक तारा, तानपुरा, सितार, दूसरे वर्ग में तूम्बे वाले तत् वाद्या– सितार, रूद्र वीणा, विचित्र वीणा, तसरे वर्ग मं तूम्बे वर्ग में तूम्बे वाले तत् वाद्य– किन्नरी वीणा, चौथे वर्ग में मानव निर्मित तूम्बे वाले वाद्य है। जैसे– तबला, भारतीय वॉयलिन ये तूम्बे लौकी, कद्दू के नहीं बने होते है। ये तूम्बे दोनों तरफ से चपटे होते है।

भारतीय संगीत के तंत्री वाद्यों की श्रेणी में तूम्बे का प्रथम प्रमाण ''सूत्र–काल'' में प्राप्त होता है। ''इससे पहले ''आरण्यण–काल'' में भी तूम्बे का उल्लेख आया है, जिसे –अम्भणः कहा गया है। सर्वप्रथम ''वाण'' तूम्ब रहित था। परिणाम स्वरूप इसमें नाद की तीव्रता कम थी।''

सूत्रकाल से ही ऋशियों ने खोज कर वैज्ञानिक नियम की स्थापना की कि कोई तरंगित वस्तु यदि किसी बर्तन पात्र या खोखली वस्तु के ऊपर रख दी जाए तो उसकी ध्वनि की तीव्रता बढ़ जाती है। ''नाट्य ाास्त्र'' में कच्छपी वीणा के रूप में तूम्बा युक्त वीणा प्राप्त होती है। इसके लगभग 200 ई. पूर्व से लेकर 1200 ई. तक के समय में पायी जाने वाली मूर्तियों में जितनी वीणाएँ प्राप्त होती है सब तूम्बे युक्त है। इसके प चात 13 वीं भाताब्दी में किन्नरी वीणा का आगमन हुआ जिसमें परदे थे तथा ये तीन तुम्बे युक्त थीं जिसके अविश्कारक मतंग मुनि थे। 17 वीं भाताब्दी में ''रामेश्वनम्'' मंदिर में उकेरी गई प्रतिमा में देख सकते हैं, उसके हाथ में किन्नरी वीणा है जिसके डॉड़ में तीन तूम्बे लगे थे। 18 वीं भाताब्दी में राधा–गोविन्दे संगीत सार'' में ''प्रताप सिंह देव'' ने दो प्रकार के तम्बूरे का वर्णन किया है।'' तानपूरे का अस्तित्व सामने आ चुका था और सितार का भी। आजकल सितार के डॉड़ के पीछे छोटा तुम्बा लगा दिया गया वास्तविकता यह है कि इसके लगाने या निकालने से नलाद की तीव्रता मे कोई अंतर नहीं आता इसका प्रायोजन इसे रखने में आसानी व लुढ़कने से बचाना।

rEc e vk/kukru i;kx& '' वर्तमान समय मं परम्परागत श्रेणी के दो की वाद्य हैं जिनमें दोनों में दो तुम्बे का प्रयोग होता है, रूद्र वीणा, विचित्र वीणा। तानपूरे के दो प्रकार के तूम्बे का प्रयोग होता है। स्त्रियों के गाने के लिए–40 से 45 तृत्त लगभग होता है। पुरूशों हेतु का तूम्बा–55 से 60 इंच होता है। आज दो तरह के तूम्बे अधिक चलते है। कलकत्ता का तूम्बा–कलकत्ता के तूम्बे कागजी व पतले होते है। आवाज भी अच्छी होती है लेकिन ये काफी हल्के व पतले होते है। जिनके ठोकर खाकर टूट जाने की आ ांका रहती है।

दूसरे महाराश्ट्र के जिला मिरज के गॉव पतरपूर के– ये तानपूरे मजबूती की दृश्टि से अधिक अच्छे होते है। इनके तूम्बे कलकत्ता के तूम्बे से आधा सूत मोटे होते है। ऐसे तत् वाद्यों जिनमें तूम्बा संलग्न रहते हैं, ये ध्वनि माधुर्य की दृश्टि से अपनी आकृति के अनुसार बदलाव ग्रहण करते है।

rf=;k e v/kukru i;kx– ''वैदिक युग से आधुनिक युग तक तन्त्री–वाद्यों में प्रयुक्त होने वाली तन्त्रियों के विकास का भी एक सुन्दर इतिहास है। उपलब्ध वैदिक सामग्री से पता चलता है कि उस काल में मूँज तथा दूब की तन्त्रियां बनायी जाती थीं। इन तन्त्रियों के बजाने की विधि का पता नहीं चलता जिससे उक्त प्रकार की ध्वनियों के इस समय सुन पाना सम्भव नहीं है। उसके बाद तन्त्रियों के निर्माण के लिए दो अन्य वस्तुओं का प्रयोग आरम्भ हुआ–रेशम का धागाा तथा जानवरों के बाल, बालों में घोड़े की पूँछ के बाल प्राचीन काल में सर्वोपरि समझे जाते थे। इन दोनों प्रकारों की तन्त्रियों में जनवरों के बालों से तन्त्रियों की ध्वनि मधुर तथा गूँज युक्त थी, किन्तु उनकी यह गूँज गज के वाद्यों में ही अधिक होती थी। घोड़े के बालों से कमान तथा बालों को ही तन्त्री रूप में प्रयुक्त होते हुये आज भी रवण–हत्था वाद्य में देखा जा सकता है जानवर के बालों के प्रयोग के बाद जानवरों की खालों से तन्त्रियों का निर्माण प्रारंभ हुआ। इन तंत्रियां को तत् कहा जाता था। तन्त्री के रूप मं प्रयुक्त होने वाली खालों में बकरे की खाल, सर्वश्रेश्ठ समझी जाती थी। आज भी सारंगी, सरिन्दा आदि में तॉत का प्रयोग देखा जा सकता है। तॉत के प्रयोग के बाद धातुओं में लोह, पीतल, तॉबे तथा चांदी के तारों को अधिक महत्व प्राप्त हुआ।'' पहले के समय में तार एक समान प्रयोग में आते थें। केवल इन्हें छोटा बड़ा कर आवाज मं भिन्नता लाई जाई जाती थी किन्तु आधुनिक समय में तारों के अलग–अलग नम्बर से उनकी मोटेपन, पतलेपन से उसमें भिन्नता लाई जाती है। जो सारंगी वाद्य के रूप में स्पश्ट है।

सितार के प्रारम्भिक रूप में तीन तारेां का प्रयोग होता था, जिन्हें म, सा, अथवा म, सा, प में मिलाया जाता था। बाद में ''मसीत खॉ'' जी ने दो तार और जोड़ दिये जिसमे एक तार जोडी़ का दूसरा पंचम का था। सन् 1871 में दिल्ली में 6 तारों वाले सितार का वर्णन मिलाता है। बाजू, खरज' (दो तार) ' पंचम, लरज, पपीहा। चिकारी के लिए ''पपीहा'' की संज्ञा प्रयुक्त की गई है। रहीम बेग'' द्वारा लिखित ग्रन्थ'' तहसील–अल–सितार'' (1874) में आठ तारों वाले सितार का भी वर्णन मिलता है। 19 वीं भाताब्दी के उत्तरार्द्ध में तक सितार में 8 तार लगने लगें। परन्तु यह संख्या एवं व्यवस्था अधिक समय प्रचलित नहीं रहीं।

पहले के समय में सितार में तार पतले प्रयुक्त होते थे। सर्वप्रथम एक नं. का तार लगता था, फिर दो और अब तीन नं का बाज का तार लगता है। आज कल के कलाकार मोटे तारों का प्रयोग करते हैं। पहले के समय में दे ाी तार प्रयोग किये जाते थे परन्तु वो जल्दी टूटती थीं एवं एवं उनमं

Oct 2017 - Dec 2017 ,Vol 3, No. 2, 142-148 ISSN 2394-9449

Electronic Journal of Advanced Research

An International Peer review E-Journal of Advanced Research

सारिकाओं के स्थान पर नि ान पड़ जाते थे। 1955–56 के लगभग भारत में विदे ी तारों का आगमन हुआ। वर्तमान समय में बीन में जर्मनी की तारों का प्रयोग होता है।

MkM e vk/kukru i;kx– ''सर्वप्रथम मनुश्य ने ''पोही बॉस'' का प्रयोग किया होगां बॉस का जीवन काल के अल्प होने के कारण डॉड़ फटे हैं जिससे बेसुरापन आ जाता है। कालान्तर से बांस के स्थान टीक की लकड़ी का प्रयोग होने लगा है। टीक की लकड़ी के अच्दी हो गई। ''असद अली खॉ'' के अनुसार यह परिवर्तन 20 वीं भाताब्दी के प्रारम्भ में ही हुए क्योकि उनके पिता''सादिक अली'' के पास जो वीणा थी, उसमें बांस के स्थान पर टीक की लकड़ी का डॉड लगा हुआ था। वर्श 1930 के लगभग कोलकाता के वाद्य निर्माता नित्यानंद ने कुछ वि ाि श्ट औजारों का अविश्कार किया जो नक्का ी व लम्बी डॉउ पोला करने सहायक थे। उस्ताद असद अली खॉ ने रूद्र–वीणा की ध्वनि बढ़ाने के लिए कुछ प्रयोग किए, जो निम्नलिखित है। वीणा के डॉड को डेढ़ इंच किया है। परिणमतः गूँज बढी। आपकी वर्तमान वीणा कोलकाता की बनी है। इसमें अपेक्षाकृत एक इंच बड़े तूम्बे हैं जससे ध्वनि की गहराई में फर्क आया है।

आज के समय में डॉड के लिए मूख्य रूप से शीशम, तुन, टीक जैसी लकड़ी का प्रयोग होता है। आज तुन की लकड़ी की डॉड सबसे अच्दी मानते हैं।

सर्वप्रथम परदे धातुओं के बनते थे जिनको मोम की सहायता से स्थापित किया जाता था। किन्तु आज स्टीज के परदे देखने को मिलते है। कुछ वाद्यों में परदे लकड़ी के होते हैं जिन्हें लॉक से स्थिर कर देते हैं परदों को'सार' या 'सुन्दरी' या ''सारिका'' आदि नाम से जानते है। कुछ परदे जर्मन धातु के होते हैं जिन्हें धागों से बांधकर स्थापित करते है। पहले के समय में परदे चौड़ाई में चपटे होते थे किन्तु वर्तमान समय में गोलाई के लिए उठे हुए होते हैं कारण परदों के चपटे होने के कारण मींड का काम नहीं हो पाता था। आाधुनिक समय में परदे की गोल व उठे होने के कारण कम से कम 5 स्वर की मींड एक साथ खीची जा सकती हैं परदोंकी भौली व परम्परा के अनुसार भिन्न–भिन्न रखते है। जैसे–

1 ^^mLrkn eLrkd vyh [kk^^ एवं उनकी ि ाश्य परम्परा में 17 परदों का सितार प्रचलित है।

2 fo'.kiqj ?kjkuk d ^^i- e.khyky ukx^^ अपने सितार में 20 परदों का प्रयोग करते हैं इनके सितार में कोमल रिशभ के लिए अतिरिक्त परदे लगे हैं इसके अतिरिक्त परदे से ये भैरवी जैसे राग में कॉर्ड्स, हारमनी का प्रयोग सरलता से कर सकते हैं।

ब्रिज में अधुनातन प्रयोग– मेरे विचार से मनुश्य ने सर्वप्रथम लकड़ी के टुकड़े की ब्रिज बनाई होगी। किन्तु तार की बार–बार के खिंचव से वह टूट ई हो गयी होगी। तब उसे किसी ठोस वस्तु की आवश्यकता पड़ी होगी। जैसी हड्डी। आज के समय मं हाथी दॉत,बारहसिंघा के सींग तथा ऊँट की हड्डी से बने ब्रिज उत्तम माने जाते हैं ये मजबूती की दृश्टि से उचित है। आधुनिक समय में हाथी

दांत और बारहसिंघा दोनों का प्रयोग अपराध है। आधुनिक समय में काली जावारी बैकलाईट सामग्री से बन रही है और उसके अच्दे परिणाम प्राप्त हो रहे हैं पहले के सितार में चपटे ब्रिज लगाए जाते थें। जिनकी जवारी करना कठिन था। आधुनिक वाद्य– निर्माताओं एवं सितार वादकों ने जावारी की ध्वनि के आधार पर तीव्र तीन श्रेणियों में बनाई है– खुली जवारी, बन्द जवारी, गोलजवारी। पहले के सितारों या तन्त्री वा़ों में खुली जवारी का ही प्रचलन था। किन्तु आज अलग–अलग कलाकार अलग तरह की ज्वारी करवाता है। जैसे– पं. रवि ांकर जी खुली जवारी बजाना पसंद करते हैं। उस्ताद विलायत खां जी बंद जवारी पसंद करते है।

3 [kfV;k%& खूँटी भी तन्त्री वाद्य का आवश्यक अंग है इसमें बाधकर वाद्य में तार लगाए जाते हैं प्राचीनकाल की प्रत्येक वीणा से लेकर आज तक क आधुनिक काल के विभिन्न तत् वाद्य जैसे वायलिन, सितार, सदोद आदि सभी में खूटियॉ होती है। ''श्री दुलाल कांजी'' के अनुसार पहले के समय मे आबनूस की लकडी की खूंटिया बनती थी। खूटियों को बनाने के लिए आजकल भी ाम, टाली परम्परागत तत् वाद्यों से प्रीाावित एवं विकसित वाद्यों में कलाकारों की प्रयोगधर्मिता

इस क्षेत्र में किए गए नवीन प्रयास निम्नलिखित हैं–

उस्ताद अलाउद्दीन खॉ द्वारा निर्मित वाद्य : 1. चन्द्र सारंग, 2. सितार बैंजो, 3. सारंग।

उस्ताद मम्मन खॉ द्वारा निर्मित वाद्यः 1. सुरसागर।

बाबूलाल गन्धर्व द्वारा निर्मित वाद्यः बेला बहार।

सास्किया के द्वारा चैलो वाद्य का भारतीयकारण।

पं. विश्व मोहन भट्ट द्वारा नवनिर्मित वाद्य विश्व वीणाः

पं. राधिका मोहर मोइत्राा द्वारा निर्मित वाद्यः 1. मोहन वीणा 2. दिलबहार 3. नवदीपा।

वाद्य निर्माता श्री वि ानदास भार्मा द्वारा निर्मित तंत्री वाद्य

1. रिक्खी तम्बरी 2. रिक्खी बॉक्स तानपूरा 3. रिक्खी'वीणा 4. रिक्खी–सुरनिखार 5. स्वर झंकार 6. रिक्खी नव चित्रा वीणा 7. राम ोश विश्वनाथ द्वारा निर्मित वाद्य ''ललिता वीणा''

दक्षियणात्य संगीत में वैज्ञानिक उपलब्धि की देनः''सुनादिनी वीणा''।

Oct 2017 - Dec 2017 ,Vol 3, No. 2, 142-148 ISSN 2394-9449

Electronic Journal of Advanced Research

An International Peer review E-Journal of Advanced Research

fu'd'k

तत् वाद्यों में आज भी संगीतज्ञों द्वारा निरंतर रूप से नित नए परिर्वतन किये जा रहे है। जो समय के बदलाव के सयाथ सा तत् वाद्यों के विकास के क्रम में तन्त्री की सामग्री के विकास के साथ–साथ वीणाओं में प्रयुक्त होने वाले अन्य सामग्री में भी विकास के स्पश्ट चिन्ह दिखते है। तन्त्री वाद्यों क निर्माण की सामग्री के साथ–साथ उनकी वादन सामग्री एवं वादन विधि में भी परिवर्तन होते रहे है। वाद्यों पर सदैव गायन का प्रभाव रहा है जैसे–जैसे गायन भौलियों में परिवर्तन आता गया वादन सामग्री में भी निरंतर परिवर्तन होता रहा है। 18वी तथा 19 वी भाताब्दी के मध्य गत का प्रयोग तत् वाद्यों में वादन के अन्तगर्तत किया जाने लगा जिसके परिणामस्वरूप तत् वाद्य जो पूर्व के कालों में संगीत मं संगति वाद्य अथवा सहायक वाद्य के रूप में प्रयुक्त होता था। गत के प्रादुर्भाव के कारण तत् वाद्यों ने गायन से पृथक हेा कर स्वयं का एक स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित किया। आज हमारी संस्थागत ि ाक्षण प्राणाली के अन्तर्गत इसे ऐच्छिक विशय के रूप में ग्रहण किया जा चुका है। जिसमें हमें तन्त्री वाद्यों में सितार, सरोद, वॉयनि मुख्यतः प्राप्त होतेम हैं यदि इस वर्ग क कुछ और महत्वपूर्ण प्राचीन वाद्यों को भी संस्थागत ि ाक्षा के अन्तर्गत ग्रहण किया जाए तो हमारे कई अप्रचलित हो चुके वाद्य जैसे–वीणा के कई प्रकार, सारंग्री के प्रकार आदि वाद्य प्रका ा में आएंगे। इससे हमारा भारतीय संगीत और अकधिक समृद्ध तो होगा ही साथ ही साथ संस्थागत ि ाक्षा में आने से हमारे परमपरागत वाद्य वादको को आजीवविका का साधन भी प्राप्त हो सकेगा। साथ ही हमारे श्रेश्ठ वादकों का तथा हमारी प्राचीन धरोहर का भविश्य सुरक्षित हो सकेगा।

Oct 2017 - Dec 2017 ,Vol 3, No. 2, 142-148 ISSN 2394-9449

Electronic Journal of Advanced Research

An International Peer review E-Journal of Advanced Research

InHk&

1 साक्षातकार– ार्मा, महे ा, '' वाद्य निर्माता'', जयपुर

2 मिश्र, डॉ. लालमणि, ''भारतीय संगीत वाद्य'', पृश्ठ– 174

3 निगम, रेखा कुमारी, '' भारतीय संगीत का विस्तृत विवेचन'' पृश्ठ– 77

4 साक्षातकार– ार्मा, महे ा, ''वाद्य निर्माता'' जयपुर

5 मिश्र, डॉ. लालमणि,''भारतीय संगीत वाद्य'', पृश्ठ–59

6 मिश्र, डॉ. लालमणि, ''भारतीय संगीत वाद्य'', पृश्ठ– 59

7 '' उस्ताद असद अली खॉ की सुश्री सुनीता का सलीवाल से बातचीत, कला वार्ता मध्य प्रदेश कला परिशद्, भोपाल, अंक–1–2, वर्श–1998, पृश्ठ–65''

8 भेंटवार्ता, श्री महे ा भार्मा, स्थान सुर मंदिर वनस्थली विद्यापीठ

9 इंटरनेट से प्राप्त जानकारी के आधार पर द्वारा स्टीवन लैड्सवर्ग, सैंटा फेएन.एम., कोलकाता, इणिडया

10 भार्मा, डॉ. योगिता, ''हिन्दुस्तानी भास्त्रीय संगीत में तंत्री वाद्यों में परिवर्तन एवं प्रवृत्तियॉ'', प्रश्ठ–40

11 वी, पृश्ठ–25,33, 45.

12 लेखिका योगिता भार्मा की पं. मणिलाल नाग से इंठरनेट से प्राप्त हुई जानकारी के आधार पर

13 मिश्र, डॉ. लालमणि,''भारतीय संगीत वाद्य'' पृश्ठ–55

14 योगिता जी द्वारा दिल्ली वाद्य निर्माता द योगिता जी द्वारा कोलकाता के सदोद निर्माता श्री दुलाल कांजी से साक्षात्कार दिल्ली।

15 जैन, डॉ. प्रभा, ''भारतीय संगीत के उन्नायक उस्ताद अलाउद्दीन खॉ, पृश्ठ–82।

16 संगीत नाटक अकादमी दिल्ली द्वारा आयोजित ''वाद्य द ान'' भाग–2 में उस्ताद मुहम्मद अली खॉ द्वारा सोदाहरण वार्ता, निनांक 26.07.2002, दिल्ली।

17 डॉ. योगिता भार्मा, ''हिन्दुस्तानी भास्त्रीय संगीत में तंत्री वाद्यों में परितर्वन एवं प्रवृत्तियॉ'', पृश्ठ–168।

18 लेखिका पं. राधिका मोइत्रा के ि ाश्य श्री सोमजीत दास गुप्त कोलकाता से साक्षात्कार, दिनांक 28. 03.2004।